Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

"सौन्दरनन्द महाकाव्य का दाम्पत्य: एक शोध-दृष्टि"

डॉ. एस.एस. गौतम
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (संस्कृत)
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
दतिया (म.प्र.)

रामकुमार अहिरवार
शोधार्थी

महाकवि अश्वघोष मूलतः बौद्धभिक्षु थे। उनकी कृतियाँ मानव समाज को सतपथ पर अग्रसर करने के लिए उन्होंने सौन्दरनन्द महाकाव्य में मानवीय वासनात्मकता का रूपांतरण मानव मात्र को दुःख त्राण दिलाने वाले मार्ग पर अग्रसर करने का प्रेरणास्पद अनुकरणीय, मंगलकरणीय, महनीय, कार्य किया है। इन्हीं तथ्यो को अनुअन्वेषित करने का लघु प्रयास इस शोध आलेख में किया जा रहा है।

विशेष शब्द - मानवीय, वासनात्मकता, रूपान्तरण, दुःखत्राण, प्रेरणास्पद, अनुकरणीय दाम्पत्य, नौका, ध्वस्त, ऐश्वर्य, आध्यात्मिक, अन्तर्मुख।

विश्व इतिहास में जितने भी महामानव हुए हैं जिनका मानवता के लिए अनुकरणीय योगदान रहा है। सभी की यात्रा गृहस्थ जीवन के मार्ग से ही हुई है। राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध इत्यादि सभी गृहस्थ जीवन के अनुभवों से ही प्रेरणा लेकर महामानव पद पर सुस्थापित हुए हैं। वैदिक संस्कृति पुरातन संस्कृति है जिसमें ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, संन्यास और वानप्रस्थ चार आश्रमों का महत्त्व प्रतिपादित हुआ है। वेदों में इसका उल्लेख है तथा धर्म शास्त्रों में गृहस्थ आश्रम को सभी आश्रमों का आश्रय दाता माना गया है।

महाकवि अश्वघोष ने सौन्दरनन्द महाकाव्य में नन्द और सुन्दरी के दाम्पत्य जीवन का रूपान्तरण मनोहारी ढंग से प्रस्तुत किया है। जहाँ भगवान बुद्ध नन्द की सुन्दरी के प्रति आसक्ति को धर्म की आसक्ति में रूपांतरित करते है।

भगस्य नावभारोह पूर्णाभनुपदस्वतीम्।
तयोपप्रतारय यो वरः प्रतिकाम्यः।।[1]

गृहस्थाश्रम सब प्रकार से परिपूर्ण और कभी ध्वस्त न होने वाली ऐश्वर्य की नौका है। हे गृहपत्नि! तू उस पर आरूढ़ होकर अपने पति को जीवन संघर्षों के समुद्र से पार कर।

यहाँ पर यह बात स्पष्ट होती है, कि गृहस्थ आश्रम को सभी आश्रमों में श्रेष्ठ बताया गया है। यह जीवन संघर्षों के समुद्र को पार करने की नौका या साधन बताया गया है।

म्हाकवि ने सौन्दरनन्द महाकाव्य के चतुर्थ सर्ग में पत्नि की अनुमति, षष्ठ सर्ग, भार्या-विलाप और सप्तम् सर्ग नन्द विलाप इन तीनों सर्गों में सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवन का वर्णन किया है।

जब भगवान बुद्ध, नन्द के महल में भिक्षा मांगने के लिए जाते हैं तो सम्पूर्ण लोगों को नन्द और सुन्दरी के दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने में लगे देखकर वह वहाँ से यथाशीघ्र ही लौट जाते हैं और चाहते भी यही है। लेकिन एक स्त्री महल के छत की खिड़की से तथागत को देखती है और वह शीघ्र ही आकर नन्द से तथागत के बिना भिक्षा दान लिए लौट जाने की बात कहती है।

अनुग्रहायास्य जनस्यशङ्के गुरुर्गृहं नो भगवान्प्रविष्टः।
भिक्षामलब्ध्वा गिरमासनं वा शून्यादरण्यादिव याति भूयः।।[2]

अर्थात् मैं समझती हूँ कि अत्यन्त आदरणीय भगवान बुद्ध इस जन पर अर्थात् हम सभी लोगों पर अनुग्रह करने के लिए हमारे घर में आये थे किन्तु भिक्षा, वचन अथवा आसन बिना पाये ही, निर्जन जंगल की भांति यहाँ से चले जा रहे हैं।

जब नन्द ने यह सुना तो वह काँपने लगा और सभी आभूषणों के होने पर भ वह सुख चैन नहीं पा रहा था और उसने अपनी पत्नि से तथागत को प्रणाम करने के लिए जाऊँगा ऐसा कह कर जाने की अनुमति माँगी।

यहाँ पर यह स्पष्ट होता है कि घर आये अतिथि या मेहमान को वचन, आसन देना चाहिए क्योंकि मेहमान हमारे घर में अग्नि की तरह प्रवेश करता है। उसे यथाशीघ्र जल प्रदान करना चाहिए और फिर अपने सामर्थानुसार आदर सत्कार करना चाहिए। यह गृहस्थ संस्कार में आता है और उसका पालन नन्द नहीं कर सका और एक राजकुमार होते हुए भी वह वृक्ष की भाँति काँपने लगता है और उसकी पत्नि भी काँप उठती है क्योंकि गृहस्थ पति-पत्नि दोनों का होता है। वह कहती है-

नाहं यियासोर्गुरूदर्शनाथंमर्हाभि कर्तु तव धर्मपीडाम्।
गच्छार्यपुत्रौहि च शीघ्रमेव विशेष को यावदयं न शुष्कः।।[3]

अर्थात मैं पूज्य के दर्शन के लिए जाने की इच्छा वाले आपके धर्म मंे बाधा डालने में समर्थ नहीं हूँ किन्तु हे आर्य पुत्र आप जाइए और शीघ्र ही लौट आइए, जब तक कि यह मेरा विशेषक सूख न जाये और आप वापस आइए।

यहाँ पर गृहस्थ दाम्पत्य जीवन का एक मूल्य स्पष्ट होता है कि जब सुन्दरी नन्द से यह कहती है कि मैं आपके धर्म के कार्य में बाधा डालने में समर्थ नहीं हूँ तात्पर्य स्पष्ट है कि पत्नि को चाहिए कि यदि उसका पति देशहित, धर्म हित, समाज हित में कार्य करे तो उसे रोकना या बाधा नहीं डालनी चाहिए और यह दाम्पत्य जीवन का संस्कार होता है।

यद्यपि नन्द यथाशीघ्र लौटकर आना चाहता था और अपने गृहस्थ जीवन में लौटना चाहता था लेकिन तथागत ने उससे कहा-

श्रद्धाधनं श्रेष्ठतमं धनेभ्यः प्रज्ञारसतृप्तिकरो रसेभ्यः।
प्रधानमध्यात्मसुखं सुखेभ्योऽविद्यारतिर्दुः खतमारतिभ्यः।।[4]

अर्थात् धनों में श्रद्धा रूपी धन श्रेष्ठ है, रसों में प्रज्ञारूपी रस तृप्तिदायक है, सुखों में अध्यात्मसुख प्रधान है और दुःखों में अज्ञान दुःख सर्वाधिक दुःखदायी है। यह दाम्पत्य जीवन का आधार बन जाता है लेकिन जब इसी जीवन को आध्यात्मिक जीवन की ओर मोड़ दिया जाता है तो मोक्ष का साधन बन जाता है। महाकवि अश्वघोष दाम्पत्य जीवन को संस्कार बताते हैं वह कहते हैं-

मां स्वामिनं स्वामिनि दोषतो गाः प्रियं प्रियार्ह प्रियकारिणं तम्।
न सत्वदन्यां प्रमदामवैति स्वचक्रवाक्या इव चक्रवाकः।।[5]

हे स्वामिनि! उन प्रिय, प्रिय के योग्य तथा प्रिय करने वाले स्वामी को दोष मत दो, जैसे चक्रवाक अपनी चक्रवाकी के अतिरिक्त किसी दूसरी को नहीं जानता है। उसी प्रकार वह आपके अलावा किसी दूसरी स्त्री का नहीं जानते हैं।

इस श्लोक में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि दाम्पत्य जीवन में कभी भी बिनाकारण जाने अपने स्वामी या पति पर आरोप-प्रत्यारोप नहीं करना चाहिए और हम दाम्पत्य जीवन का एक संस्कार मिलता है भावी पति जो दाम्पत्य जीवन के लिए बहुत आवश्यक है।

इस प्रकार इस शोध पत्र के माध्यम से सौन्दरनन्द महाकाव्य में वर्णित दाम्पत्य जीवन मूल्यों पर प्रकाष डालने का प्रयास किया है। तथागत नन्द को दीक्षित करके योग बल से सर्वप्रथम उसे कान्ही बंदरिया का रूप दिखाते हैं और नन्द से पूछते हैं कि क्या तुम्हारी पत्नि इससे सुन्दर है। नन्द हंसकर कहता है कि कहाँ ये कान्ही बंदरिया और कहां वो आपकी सुन्दर बहू फिर तथागत उसको स्वर्ग की अप्सरायें दिखाते हैं और नन्द उन्हें देखकर लालायित हो जाता है और वह उस समय अपनी पत्नि

को भूल जाता है और अपसराओं की चाहत करने लगता है। तब तथागत उसको तपस्या करने के लिए कहते हैं और वह तपस्या भी करता है लेकिन उपहास का पात्र बनता है। अहो नन्द अप्सराओं के लिए तपस्या कर रहा है। तब वह तथागत से सही मार्ग जानना चाहता है और तथागत उसके दाम्पत्य प्रेम को अध्यात्मिक प्रेम से जोड़ देते हैं और वह अपनी चेतना से प्रेम करने लगता है और परम पद प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार मोक्ष का कारण भी दाम्पत्य प्रेम ही रहा है क्योंकि नन्द जितना प्रेम अपनी पत्नि से करता था उतना ही उसने अपनी चेतना से किया।

हम सबका प्रेम भी अन्तमुख होना चाहिए तभी हम सबके जीवन का कल्याण होगा।

निष्कर्ष-

इस शोध पत्र के माध्यम से निष्कर्ष निकलकर सामने आता है। यद्यपि दाम्पत्य जीवन का आधार प्रेम ही है लेकिन बिना गुरू मार्गदर्शक के हम उस प्रेम को भी दिशा नहीं दे पाते और अपने दाम्पत्य जीवन को दिशाहीन बना लेते हैं। ठीक इसे विपरीत यदि हमारे जीवन में सही मार्गदर्शक मिल जाता है तो वही जीवन सार्थक और समाज कल्याणकारी बन जाता है। जैसे कि नन्द के साथ हुआ तथागत ने उसी सच्चे प्रेम को अन्तर्मुख बना दिया और तथागत ने उस पर अनुग्रह किया। इसी प्रकार हम सबका जीवन भी सही दिशायुक्त होना चाहिए।

भवतु सब्बमंगलम्

संदर्भ-

1. अथर्ववेद (2/36/5) विश्व संस्कृति सूक्तिकोष पृष्ठ 23
2. सौन्दरनन्द 4/30/89
3. सौन्दरनन्द 4/34/91
4. सौन्दरनन्द 5/24
5. सौन्दरनन्द 6/22